9.5.2020

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा भाग - 3

विषय - भाषा विज्ञान

पाठ - भाषा - बोली

छात्र - छात्राओं !

कल के पाठ में हमलोगों ने देखा था कि प्रायः बोली व्यक्ति-बोली, उपबोली के सामूहिक रूप में जब पर्याप्त समानता होती है तभी वह आकार ग्रहण करती है। दूसरे भाषा से अलग बोली के अन्तर पर विचार के क्रम में यह बात आयी थी कि बोली में साहित्यिक रचनाओं की कमी स्थानीय एवं लघु रूप होने तथा व्याकरण की उपलब्धी नहीं होने के कारण बोली भाषा नहीं कहलाती है। इस संदर्भ में डॉ. भोलानाथ तिवारी मानते हैं कि "जैसे बहुत-सी व्यक्ति-बोलियाँ — जो आपस में प्रायः पर्याप्त साम्य रखती हैं — का सामूहिक रूप उपबोली है, उसी प्रकार बहुत-सी मिलती-जुलती उपबोलियों का सामूहिक रूप बोली है, और मिलती-जुलती बोलियों का सामूहिक रूप भाषा है।"

डॉ. श्यामसुन्दर दास ने बोली का प्रयोग 'सब-डाइलेक्ट' और पैटवा के लिए किया है। यह 'पैटवा' शब्द यूरोप और अमेरिका के भाषा विज्ञानियों ने प्रयोग में लाया था जिसका तात्पर्य असभ्यतापूर्ण बोलियों के प्रयोग से है। भारतीय अन्य सभी भाषा विज्ञानियों ने बोली के लिए Dialect शब्द के प्रयोग को माना है अर्थात् बोली Dialect का ही पर्याय है। कुछ भाषाविज्ञानी बोली के लिए 'विभाषा' 'उपभाषा' या प्रान्तीय भाषा का भी प्रयोग करते हैं।

उपर्युक्त विवेचन में बोली के लिए कई उपनाम सामने आए हैं जो 'विभाषा', उपभाषा या प्रान्तीय भाषा तक आ गये हैं जो भाषा के अत्यन्त करीब है। हम इन्हीं उपभाषा, प्रान्तीय भाषा ने [illegible]

अध्ययन की सुविधा के लिहाज से बोलियों के नाम चाहे जितने गिना दिये जाँय अंतिम रूप में बोली और भाषा ही विवेच्य बन जाते हैं। समाहार में कहें तो 'बोली' किसी भाषा के ऐसे क्षेत्रीय रूप को कह सकते हैं जिसका क्षेत्र छोटा होता है। चूंकि भाषा स्थान और काल विशेष में परिवर्तनशील होती है इसलिए इसका स्वरूप बदलना स्वाभाविक है। कहा भी जाता है — 'तीन कोस पर पानी बदले चार कोस पर बानी'। अर्थात् जैसे पाँच-छ: किलोमीटर पर पानी का स्वाद बदला हुआ मिलता है उसी प्रकार स्वत: स्वाभाविक रूप हमारी बोली, भाषा में थोड़ा ही सही बदलाव देखने को मिल जाता है। उदाहरणार्थ हम अपने निकट की मगही बोली का स्वरूप ही देखें तो भोजपुरी क्षेत्र के निकट की मगही पटना तक आते-आते मिश्रित मगही होती है तो जहानाबाद में आदर्श मगही बन जाती है। यह मगही गया में थोड़े अन्तर से खरापन लिये हुए दीखती है तो नवादा में इसका स्वरूप बिल्कुल बदला नजर आता है। नालंदा की मगही पर पटनिया मगही का असर है।

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अपने भाषा विज्ञान में लगभग निष्कर्षत: लिखा है — "'बोली' किसी भाषा के एक ऐसे सीमित क्षेत्रीय रूप को कहते हैं जो ध्वनि, रूप, वाक्य गठन, अर्थ, शब्द-समूह तथा मुहावरे आदि की दृष्टि से उस भाषा के परिनिष्ठित ~~रूप~~ तथा अन्य क्षेत्रीय रूपों से भिन्न होता है, किन्तु इतना भिन्न नहीं कि अन्य रूपों के बोलने वाले उसे समझ न सकें, साथ ही जिसके अपने क्षेत्र में कहीं भी बोलने वालों के उच्चारण, रूप-रचना, वाक्य-गठन, अर्थ, शब्द-समूह तथा मुहावरों आदि में कोई बहुत स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण भिन्नता नहीं होती।" - पृष्ठ - 78

अब विचारणीय यह रह जाता है कि कोई बोली भाषा कैसे बन जाती है। यह तो स्पष्ट है कि कोई बोली जब अन्य बोलियों से बड़े जन-समुदाय द्वारा महत्त्व पाने लगती है तब वह भाषा बन जाती है।

राजनीति या अन्य
यह महत्व साहित्य, धर्म, किसी खास बोली को प्राप्त
महत्वपूर्ण कारणों से जब कि पड़ोस की दूसरी बोलियों
है और वह भी इस रूप में कि प्रान्तीय
या राज्य विशेष पर आधारित भाषाएं जिन्हें
भाषा कही जाती हैं जब 'खास बोली विशेष' को
किन्हीं कारणों की वजह से महत्व दिया देने लगते
हैं तब स्वयं: वह खास विशेष बोली भाषा का रूप ले
लेती है। इसे कुछ उदाहरणों से समझा जा सकता है।
खड़ी बोली हिन्दी जो आज भारत की राजभाषा है।
अर्थात् भारतीय संविधान ने इसे यह दर्जा प्रदान किया है
यह खड़ी बोली दिल्ली के आस-पास की बोली
थी। मध्यकाल तक भारतीय काव्य की भाषा भी ब्रजभाषा
बनी हुई थी यानी बहुतायत में अन्य बोलियों की अपेक्षा
ब्रजभाषा में काव्य रचनाएँ अधिक मात्रा और महत्व दोनों
दृष्टियों से हो रही थी। 'अवधी' जो अवध यानी अयोध्या क्षेत्र
विशेष की बोली थी फिर ब्रजभाषा बाजी मारे हुई थी। लेकिन
आधुनिक युग में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के उदय से जब खड़ी बोली
में काव्य-रचना शुरू हुई और भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता
आन्दोलन में हिन्दी बोलने वालों में स्वतंत्रता आन्दोलन
को महत्वपूर्ण राजनीतिक बल मिला तब यह खड़ी बोली
हिन्दी स्वतंत्रता आन्दोलन की भाषा से स्वतंत्रता प्राप्त
होते ही भारतीय राजभाषा बन गई। ध्यातव्य यह
है गुजराती बोलने वाले महात्मा गांधी और सी. राजगो
पालाचारी जैसे दूसरे प्रान्तों के भाषा-भाषी भी
खड़ी बोली हिन्दी को समर्थन देने लगे थे।

मध्यकाल में 'अवधी' में तुलसीदास के 'रामचरित
मानस' और अन्य काव्यों की रचना करके विश्व में अवधी और
भारतीयता की पहचान स्थापित की। इसी तरह बिहारी बोलियों
मैथिल क्षेत्र के विद्यापति ने मैथिली में अपनी भक्ति
और श्रृंगारिक रचनाओं के द्वारा जैसी मैथिली को पहचान दिला
वैसी दूसरी बोलियाँ बड़े क्षेत्र विशेष में बोली जाकर भी नहीं दि
सकीं। निष्कर्ष स्वरूप कहा जायेगा कि बोलियाँ भी भाषा का रू
ले सकेंगी।

लेख
हिन्दी विभाग